अध्याय 4

मगध साम्राज्य

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- भारत में जनपदों, महा जनपदों और राज्यों का कैसे विस्तार हुआ और इसमें शासन करने वाले शासकों ने कैसे इसे महान और शक्तिशाली साम्राज्य बना दिया।
- इन शासकों की नीतियाँ और कार्यप्रणाली तथा संरचना कैसी थी कि सीमित संसाधनों में उस काल में इन्होंने कई प्रतिमान स्थापित किये।

महाजनपदों का उदय (Rise of Mahajanapadas)

छठी शताब्दी ई.पू. में व्यापार की प्रगति, लोहे के व्यापक प्रयोग, मुद्रा का प्रचलन और नगरों के उत्थान से धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में युगांतकारी परिवर्तन आया। इस काल में कृषि में नवीन तकनीक तथा लोहे के प्रयोग के कारण अधिशेष उत्पादन होने लगा। कृषि अधिशेष से व्यापार एवं वाणिज्य को बल मिला, जिससे दूसरी नगरीय क्रान्ति आई। इस कारण उत्तर वैदिक काल के जनपद, महाजनपदों में परिवर्तित हो गए।

महाजनपदों की कुल संख्या 16 थी, जिसका उल्लेख बौद्ध ग्रन्थ—अंगुत्तर निकाय, महावस्तु एवं जैन ग्रन्थ—भगवती सूत्र में मिलता है। इसमें मगध, कोसल, वत्स और अवन्ति सर्वाधिक शक्तिशाली थे। यह काल द्वितीय नगरीकरण के नाम से जाना जाता है। सोलह महाजनपदों में से 15 महाजनपद उत्तर माप्त में स्थित थे जबकि एक महाजनपद अश्मक दक्षिण माप्त स्थित था।

मल्ल महाजनपद के दो भाग थे—एक की राजधानी कुशीनगर एवं दूसरे की पावा थी। कुशीनगर में बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ, जबकि पावा में महावीर को।

वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी थी। राजा निचक्षु ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया था। बुद्ध काल में उदयन यहाँ का प्रसिद्ध राजा था। अश्मक गोदावरी नदी के तट पर स्थित महाजनपद था, जिसकी राजधानी पोतना अथवा पोटिल थी। महाजनपदों में केवल अश्मक ही नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित था। शेष 15 महाजनपद उत्तर भारत में अवस्थित थे।

तालिका 4.1: महाजनपद एवं उनकी राजधानियाँ

महाजनपद	राजधानी	महाजनपद	महाजन
मगध	राजगृह	वत्स	कौशाम्बी
अवन्ति	उज्जयिनी/महिष्मती	कुरू	हस्तिनापुर
वज्जि	वैशाली	मत्स्य	विराटनगर
कोसल	श्रावस्ती	पांचाल	अहिच्छत्र/ काम्पिल्य
काशी	वाराणसी	सूरसेन	मथुरा
अंग	चम्पा	गान्धार	तक्षशिला
मल्ल	कुशीनगर	कम्बोज	हाटक
चेदि	सोथवती	अश्मक	पोतन

गान्धार महाजनपद की राजधानी तक्षशिला प्राचीन काल में विद्या एवं व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र थी। तक्षशिला झेलम तथा सिन्धु नदी के मध्य स्थित थी। पुष्कलावती यहाँ का प्रमुख नगर था।

अश्वसेन काशी, कोख्य कुरू, विराट मत्स्य, अवन्तिपुत्र सूरसेन, प्रसेनजित कोसल तथा चन्द्रवर्मन गांधार के प्रमुख शासक थे।

मगध का उत्कर्ष (Rise of Magadh)

महाजनपदों में मगध, वत्स, कोसल एवं अवन्ति अत्यंत शक्तिशाली थे। ये महाजनपद राजनीतिक वर्चस्व के लिए आपस में संघर्षरत थे। इनमें मगध

और अवन्ति ज्यादा महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। अंततः मगध ने अवन्ति पर भी अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर ली। विस्तृत उपजाऊ मैदान, कृषि में लोहे तथा नवीन तकनीक का प्रयोग, क्षेत्र एवं हाथियों की उपलब्धता, खनिज संसाधनों की उपलब्धता, व्यापार की अनुकूल दशा तथा प्राकृतिक सुरक्षा ने मगध के उत्कर्ष में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

योग्य शासकों एवं मंत्रियों के योग्य नेतृत्व ने मगध के उद्भव की प्रक्रिया को आसान बना दिया। मगध पर क्रमशः हर्यक वंश, शिशुनाग वंश एवं नन्द वंश ने शासन किया, तत्पश्चात् मौर्य वंश की स्थापना हुई थी।

हर्यक वंश (544–412 ई.पू.)

बिम्बिसार (544-492 ई.पू.) यह प्रथम शक्तिशाली शासक था। इसे श्रेणिक के नाम से भी जाना जाता था। बिम्बिसार ने अंग राज्य को जीतकर अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का शासक नियुक्त किया। मगध राज्य की आरंभिक राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) थी।

इसकी प्रथम पत्नी कोशल देवी कोसल राज प्रसेनजित की बहन थी, दूसरी लिच्छवि राजकुमारी चेल्लना थी तथा तीसरी भद्रकुल के प्रधान की पुत्री क्षेमा थी। वैवाहिक संबंधों के बदले मगध को कोसल से काशी का गाँव प्राप्त हुआ था।

बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को अवन्ति नरेश चण्डप्रद्योत के राज्य में चिकित्सार्थ भेजा था। बिम्बिसार बुद्ध का समकालीन तथा बौद्ध धर्मानुयायी था। इसने बौद्धों को वेलवन नामक वन दान में दिया था।

अजातशत्रु (492-460 ई.पू.) अपने पिता बिम्बिसार की हत्या करके मगध का शासक बना, जो कुणिक नाम से जाना जाता था। इसने काशी तथा वज्जि संघ को एक लंबे संघर्ष के बाद मगध साम्राज्य में मिला लिया। इसके मंत्री वस्सकार द्वारा वैशाली के लिच्छवियों में फूट डालने के कारण ही अजातशत्रु के वज्जि संघ पर विजय प्राप्त हुई। इस युद्ध में अजातशत्रु ने रथमूसल तथा महाशिलाकण्टक नामक नए हथियारों का प्रयोग किया।

इसके शासन काल के 8वें वर्ष में बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ। बुद्ध के अवशेषों पर उसने राजगृह में स्तूप का निर्माण कराया। इसी के काल में राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया, जिसमें बुद्ध की शिक्षाओं को सुत्तपिटक तथा विनयपिटक के रूप में लिपिबद्ध किया गया।

उदयिन (460-444 ई.पू.) अजातशत्रु की हत्या कर मगध का शासक बना। पुराणों एवं जैन ग्रन्थों के अनुसार, गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र (कुम्रहार) नामक नगर की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाया। उदयिन जैन धर्मावलम्बी था।

शिशुनाग वंश (412–344 ई.पू.)

शिशुनाग (412-394 ई.पू.) ने अवन्ति तथा वत्स राज्य पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिला लिया। इसे जनता द्वारा चयनित शासक माना जाता था। शिशुनाग वे वज्जियों के ऊपर कठोर नियंत्रण रखने के लिए पाटलिपुत्र के अतिरिक्त वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।

कालाशोक (394-366 ई.पू.) का नाम पुराण तथा दिव्यावदान में काकवर्ण मिलता है। इसने वैशाली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। कालाशोक की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों ने 344 ई. पू. तक शासन किया। इस वंश का अन्तिम शासक नन्दिवर्द्धन (महानन्दिन) था।

गणराज्य

महाजनपद काल में कुछ गणराज्य भी मौजूद थे। इनमें लिच्छवी सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य था। प्रमुख गणतंत्र निम्नलिखित थे—

1. कपिल वस्तु के शाक्य—यह नेपाल की तराई में स्थित था। बुद्ध का जन्म इसी गणराज्य में हुआ था। अंततः कोसल महाजनपद ने इसे अपने राज्य में मिला लिया।
2. रामग्राम के कोलिय—यह गणराज्य शाक्यों का पड़ोसी था।
3. कुशीनारा के मल्ल—केसपुत्त के कालाम—बुद्ध के गुरू आलार कालाम इसी गणराज्य से थे।
4. मिथिला के विदेह—यहाँ के राजा जनक अपने विद्वता के लिए प्रसिद्ध थे।
5. वैशाली के लिच्छवी—यह बुद्ध काल का सबसे शक्तिशाली गणराज्य था। इसकी राजधानी वैशाली थी।

पिप्लिवन के मोरिय, अलकप्पा के बुलि, पावा के मल्ल और सुसुमारगिरि के भग्ग अन्य गणराज्य थे। लेकिन इनके बारे में विशेष जानकारी नहीं मिलती है।

नन्द वंश (344–322 ई.पू.)

नन्द वंश का संस्थापक महापद्मनन्द एक शूद्र शासक था। पुराणों में महापद्मनन्द को सर्वक्षत्रन्तक (क्षत्रियों का नाश करने वाला) तथा भार्गव (परशुराम का अवतार) कहा गया है। एक विशाल साम्राज्य स्थापित कर उसने एकराट एकच्छत्र की उपाधि धारण की।

महापद्मनन्द के आठ पुत्रों में धनानन्द सिकन्दर का समकालीन था। ग्रीक (यूनानी) लेखकों में इसे अग्रमीज कहा गया है। धनानन्द के समय 326 ई.पू. में सिकन्दर ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया था। 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू चाणक्य की सहायता से धनानन्द की हत्या कर मौर्यवंश के शासन की नींव डाली। कहा जाता है कि नन्दों की सेना से भयभीत होकर सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण नहीं किया।

विदेशी आक्रमण (Foreign Invasion)

ईरानी आक्रमण (Iranian Invasion)

भारत में प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी वंश के शासक डेरियस-प्रथम या दारा प्रथम (दारयवहु) ने 516 ई.पू. में किया। उसने सिंधु नदी के पश्चिमी स्रोत और सिंध स्रोत को जीत कर अपने साम्राज्य में मिला लिया यह स्रोत फारस (ईरान) का शताब्दी (20 वां प्रांत) बन गया।

सिकन्दर द्वारा 331 ई.पू. में दारा तृतीय को पराजित करने के साथ ही भारत से ईरानी अधिकार समाप्त हो गया।

ईरानी आक्रमण का प्रभाव

- क्षत्रप शासन प्रणाली का विकास हुआ।
- समुद्री मार्ग की खोज से विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला साथ ही खरोष्ठी लिपि तथा आरमेइक लिपि का विकास हुआ।
- अभिलेख उत्कीर्ण करने की प्रथा प्रारम्भ हुई।

यूनानी आक्रमण (Greek Invasion)

भारत पर प्रथम यूनानी आक्रमण सिकन्दर ने 326 ई.पू. खैबर दर्रे को पार कर किया। आक्रमण के समय तक्षशिला का शासक आम्भी था, जिसने समर्पण कर दिया।

सिकन्दर का सबसे प्रसिद्ध युद्ध झेलम नदी के तट पर राजा पोरस के साथ हुआ, जो वितस्ता के युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध में पोरस की पराजय हुई। वितस्ता के युद्ध को हाइडेस्पीज का युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। पोरस का राज्य झेलम और चिनाब नदी के बीच में स्थित था।

सिकन्दर की सहायता करने वाले भारतीय शासक शशिगुप्त, आम्भी और संजय थे। सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी से आगे बढ़ने से इनकार कर दिया था। भारतीय भू-भाग पर सिकन्दर की अन्तिम विजय पाटल राज्य के विरुद्ध थी।

सिकन्दर ने दो नगरों की स्थापना की। पहला नगर 'निकैया' (विजय नगर) विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में तथा दूसरा अपने प्रिय घोड़े के नाम पर बुकाफेला रखा।

सिकन्दर विजित भारतीय प्रदेशों को अपने सेनापति फिलिप को सौंप कर वापस लौट गया। लगभग 323 ई.पू. में बेबीलोन में उसका निधन हो गया। सिकन्दर भारत में लगभग 19 वर्ष रहा। अरस्तू सिकन्दर के गुरू थे।

यूनानी आक्रमण का प्रभाव

- प्राचीन भारत और प्राचीन यूरोप को निकट आने का अवसर मिला।
- मुद्रा निर्माण की कला के विकास में योगदान।
- गांधार शैली के विकास में योगदान।
- छोटे-छोटे राज्यों के एकीकरण के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ।

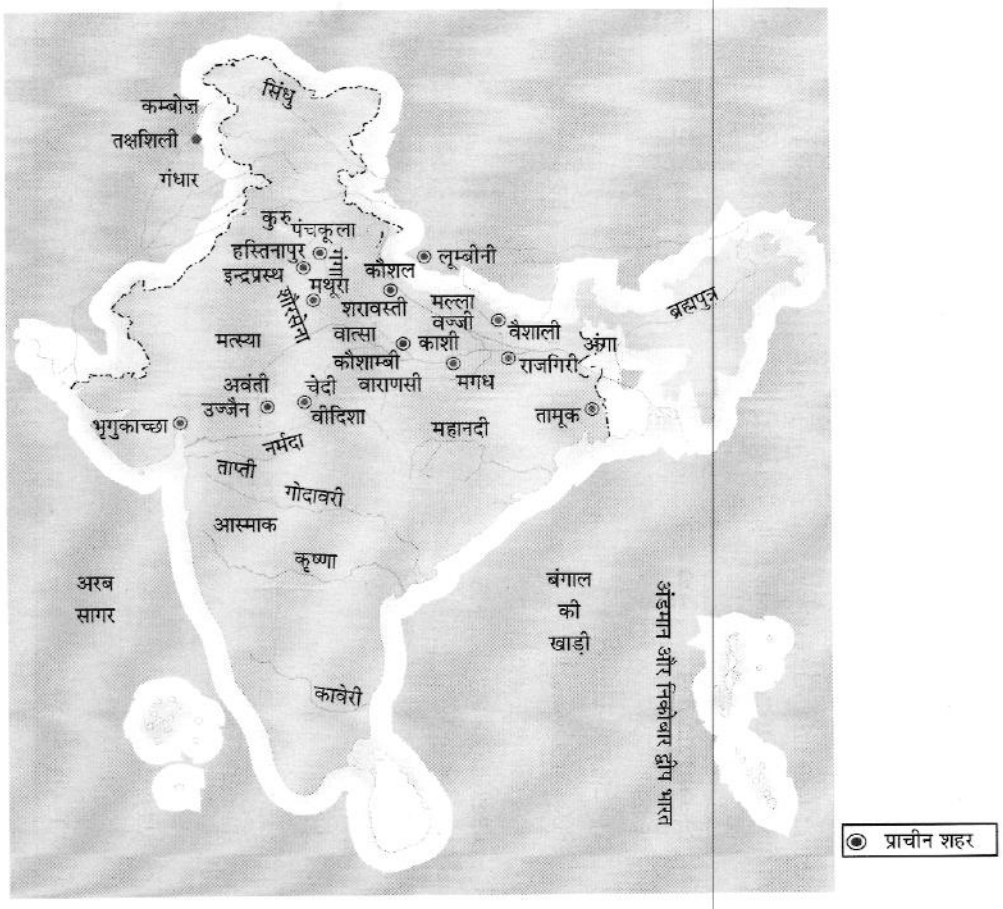

चित्र 4.1: महाजनपद

अध्याय सार संग्रह

- ईसा पूर्व छठी शताब्दी में आर्थिक दशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। व्यापार में प्रगति, सिक्कों का प्रचलन और नगरों का उत्थान–तीन महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं।
- 'रत्निन्' प्रशासनिक अधिकारी थे। ये राजा के प्रति उत्तरदायी थे।
- मगध, वत्स, कोसल और अवंति ये चार इस काल के शक्तिशाली राज्य थे।
- इस काल में राजतंत्रात्मक राज्यों के अतिरिक्त कुछ गणराज्य भी थे, जो प्राय: हिमालय की तलहटी में स्थित थे।
- ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में उच्च अधिकारी और मंत्री अधिकतर पुरोहित अर्थात् ब्राह्मणों में से नियुक्त किए जाते थे।
- इस काल में करारोपण प्रणाली नियमित हो गई। बलि, शुल्क और भाग नामक कर पूरी तरह स्थापित हो गए।
- योद्धा और पुरोहित वर्ग के लोग करों के भुगतान से मुक्त थे। करों का अधिकांश बोझ किसानों पर पड़ता था, जो मुख्यत: वैश्य थे।
- इस काल में पहली बार निवास की भूमि और कृषि की भूमि अलग-अलग कर दी गई। इस काल में सर्वप्रथम स्थायी, नियमित एवं सुदृढ़ सेना का गठन हुआ।
- जनपदकाल में चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, काशी तथा कौशाम्बी 6 महानगर थे।
- मगध शासक बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को अवंति के शासक प्रद्योत की चिकित्सा के लिए भेजा था।
- भारत पर ईरानियों का पहला सफल आक्रमण डेरियस प्रथम द्वारा किया गया।
- सिकंदर के आक्रमण तक पश्चिमोत्तर भारत में ईरानी आधिपत्य बना रहा।
- कहा जाता है कि नंदों की सेना से भयभीत हो कर सिकंदर ने भारत पर आक्रमण नहीं किया।
- भारत में गांधार कला शैली का विकास यूनानी प्रभाव का ही परिणाम है।